

भारत-बांग्लादेश संबंधों में नया मोड़: शेख हसीना के जाने का क्षेत्रीय राजनीति पर प्रभाव

डॉ. पप्पी मिश्रा¹, अजय प्रताप सिंह²

¹ प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, डी.जी. पीजी कॉलेज, कानपुर, उ.प्र.

² शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, डी.जी. पीजी कॉलेज, कानपुर, उ.प्र.

सारांश:

भारत-बांग्लादेश संबंध पिछले दो दशकों में शेखी हसीना के नेतृत्व में स्थिरता, विश्वास और व्यापक सहयोग पर आधारित रहे हैं। हसीना के कम्युनिटी ने सीमा प्रबंधन, व्यापार वृद्धि, ऊर्जा सहयोग और सोलर पैनल को नई दिशा दी। अगस्त 2024 में उनके सत्ता से बाहर होने के बाद यह संबंध एक महत्वपूर्ण मोड़ पर कायम हैं। इस पत्र में द्वितीयक आँकड़ों और धार्मिक साहित्य के आधार पर विश्लेषण किया गया है कि सत्ता परिवर्तन का भारत-बांग्लादेश आपूर्ति, दक्षिण एशिया की शक्ति संतुलन व्यवस्था और शोध बे ऑफ बंगाल-इंडो-पैसिफिक क्षेत्रीय समूह पर क्या प्रभाव पड़ा है। अध्ययन से स्पष्ट हुआ कि भारत की प्रतिष्ठा अब केवल राजनीतिक स्तर पर नहीं है, बल्कि सामुदायिक उद्यम-जैसे ऊर्जा, व्यापार और जल संसाधन-पर टिकी हुई है। व्यापार एवं लॉजिस्टिक्स में कंपनी, सीमा प्रबंधन की विशेषताएं और जल बँटवारे की समाधान समस्याएँ नई चुनौतियाँ प्रस्तुत करती हैं। साथ ही, बिम्स्टेक और सार्क जैसे क्षेत्रीय मंचों में बांग्लादेश की भूमिका, चीन और जापान के सक्रिय और इंडो-पैसिफिक में उभरते परिरक्ष्य क्षेत्रीय परिरक्ष्य को और जटिल बना रही है। रिसर्च-पत्र का निष्कर्ष यह है कि निकट भविष्य में स्थिरता बहाल करने के लिए एसएमई एसओपी सुधार, ऊर्जा व्यापार के नियम और बे ऑफ बंगाल में बहुआयामी सहयोग शक्ति सिद्ध होगी।

मूल शब्द: भारत-बांग्लादेश संबंध, शेख हसीना सत्ता परिवर्तन, क्षेत्रीय शक्ति संतुलन, बे ऑफ बंगाल भू-राजनीति, भारत-पैसिफिक रणनीति।

परिचय

शेख हसीना, जिन्होंने एक दशक से भी अधिक समय तक बांग्लादेश का नेतृत्व किया, ने देश की घरेलू स्थिरता और बाहरी संबंधों को आकार देने में एक निर्णायक भूमिका निभाई। उनके नेतृत्व में निरंतर आर्थिक विकास हुआ, जिसके परिणामस्वरूप बांग्लादेश एशिया की सबसे तेज़ी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में से एक के रूप में उभरा और पिछले दो दशकों में 6-7% की औसत जीडीपी वृद्धि दर बनाए रखी। उनकी सरकार ने औद्योगिक विस्तार पर जोर दिया, विशेष रूप से कपड़ा और परिधान क्षेत्र में, जो देश की निर्यात आय का लगभग 84% हिस्सा है। राजनीतिक मोर्चे पर, उन्होंने राज्य संस्थाओं पर अपनी मज़बूत पकड़ बनाए रखी, साथ ही असहमति को दबाने और विपक्षी दलों की भूमिका को सीमित करने के लिए आलोचना का सामना भी करना पड़ा। क्षेत्रीय स्तर पर, हसीना को अक्सर भारत के लिए एक भरोसेमंद साझेदार के रूप में देखा जाता था, खासकर सुरक्षा, संपर्क और व्यापार के मामलों में। इसलिए, सत्ता से उनका जाना न केवल बांग्लादेश के भीतर, बल्कि दक्षिण एशियाई राजनीति की व्यापक गतिशीलता में भी एक महत्वपूर्ण बदलाव का प्रतीक है।

दक्षिण एशिया में भारत-बांग्लादेश संबंधों का महत्व इतिहास, संस्कृति, भूगोल और अर्थशास्त्र में उनके गहरे अंतर्संबंधों में निहित है। 1971 में बांग्लादेश की आज़ादी में भारत की अहम भूमिका थी और तब से दोनों देशों ने दुनिया की सबसे लंबी सीमाओं में से एक, 4,000 किलोमीटर से ज़्यादा लंबी सीमा साझा की है। हसीना के कार्यकाल में

द्विपक्षीय संबंधों में 2015 के भूमि सीमा समझौते जैसे विवादास्पद मुद्दों को सुलझाने में उल्लेखनीय प्रगति हुई, जिसके तहत 50,000 से ज़्यादा बस्तियों में रहने वाले लोगों को प्रभावित करने वाले विवादों का निपटारा किया गया। दोनों देशों के बीच व्यापार लगातार बढ़ा है और हाल के वर्षों में द्विपक्षीय व्यापार लगभग 18 अरब डॉलर तक पहुँच गया है, जिससे भारत बांग्लादेश के शीर्ष व्यापारिक साझेदारों में से एक बन गया है। इसके अलावा, ऊर्जा साझेदारी, सीमा प्रबंधन और क्षेत्रीय संपर्क परियोजनाओं में सहयोग ने परस्पर निर्भरता को मज़बूत किया है। भारत अपनी "पड़ोसी पहले" और "एक्ट ईस्ट" नीतियों में बांग्लादेश को एक महत्वपूर्ण साझेदार मानता है, जबकि बांग्लादेश पारगमन मार्गों, बाज़ार पहुँच और क्षेत्रीय सुरक्षा समन्वय के लिए भारत पर निर्भर है।

शेख हसीना के जाने के प्रभाव का अध्ययन करने का औचित्य द्विपक्षीय और क्षेत्रीय स्थिरता, दोनों के लिए पैदा हुई अनिश्चितता में निहित है। नेतृत्व शून्यता या नीतिगत दिशा में बदलाव व्यापार, बुनियादी ढाँचे और ऊर्जा के क्षेत्र में चल रहे सहयोग को प्रभावित कर सकता है, साथ ही सीमा सुरक्षा और नदी जल बंटवारे को लेकर पुराने तनावों को भी फिर से उजागर कर सकता है। बांग्लादेश में वैकल्पिक राजनीतिक ताकतों का उदय देश के झुकाव को अन्य क्षेत्रीय शक्तियों, खासकर चीन और पाकिस्तान की ओर मोड़ सकता है, जो ढाका में अपना प्रभाव बढ़ाने के लिए उत्सुक हैं। ऐसे बदलाव दक्षिण एशिया में शक्ति संतुलन को अनिवार्य रूप से प्रभावित करेंगे, जिसका बिस्मटेक और सार्क जैसे संगठनों पर भी संभावित प्रभाव पड़ेगा। इसलिए, इस अध्ययन का दायरा बांग्लादेश की घरेलू राजनीति के साधारण विश्लेषण से आगे बढ़कर यह समझना है कि हसीना का जाना भारत की विदेश नीति की प्राथमिकताओं को कैसे नया रूप दे सकता है, क्षेत्रीय सुरक्षा ढाँचे को बदल सकता है, और दक्षिण एशियाई भू-राजनीति में बांग्लादेश की भूमिका को कैसे पुनर्परिभाषित कर सकता है।

साहित्य समीक्षा

1. **Das, R., & Mandora, R. (2024).** इस अध्ययन ने 1971 के बाद भारत-बांग्लादेश रक्षा संबंधों के ऐतिहासिक विकास को रेखांकित किया। इसमें दिखाया गया कि स्वतंत्रता संग्राम के दौरान भारत के सहयोग ने रक्षा साझेदारी की नींव रखी और बाद में सीमा प्रबंधन, आतंकवाद-रोधी सहयोग तथा क्षेत्रीय स्थिरता में दोनों देशों ने रणनीतिक साझेदारी को बढ़ाया।
2. **India-Bangladesh Ties in the 21st Century (2021).** इस रिपोर्ट में भारत-बांग्लादेश संबंधों के 50 वर्षों की समीक्षा की गई है। इसमें ऐतिहासिक मित्रता, 2015 भूमि सीमा समझौते, व्यापारिक वृद्धि (भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार बांग्लादेश), और कनेक्टिविटी परियोजनाओं का विस्तृत वर्णन किया गया। साथ ही, तीस्ता जल विवाद और सीमा हत्याओं को अब भी चुनौतियों के रूप में चिन्हित किया गया।
3. **Malik, Z. A. (2014).** इस पेपर ने यूपीए सरकार के दौरान भारत की नीतियों का विश्लेषण किया। इसमें दिखाया गया कि व्यापार, ऊर्जा, सीमा प्रबंधन, अवैध प्रवास और नदी जल बंटवारे जैसे मुद्दे संबंधों के केंद्र में रहे। साथ ही, यूपीए काल में दोनों देशों ने सांस्कृतिक और आर्थिक समझौतों को आगे बढ़ाने की कोशिश की लेकिन अविश्वास और सुरक्षा संबंधी चिंताओं ने बाधाएँ डालीं।
4. **Dabova, E. (2014).** इस शोध में भारत-बांग्लादेश सीमा पर बनाए जा रहे बाड़ और प्रवासन की समस्या का विश्लेषण किया गया। अध्ययन का निष्कर्ष यह था कि सीमा बाड़ प्रवासन और सुरक्षा समस्याओं का स्थायी समाधान नहीं है, बल्कि यह गरीबी, असमानता और असंतोष को और बढ़ाता है, जिससे उग्रवाद को बल मिल सकता है।

5. **Bhattacharjee, J. (2020).** इस लेख में भारत-बांग्लादेश संबंधों की 50 साल की यात्रा पर प्रकाश डाला गया। इसमें मुक्ति संग्राम, 1972 की मैत्री संधि, 1996 गंगा जल संधि और हाल के वर्षों में अवामी लीग के सत्ता में आने से द्विपक्षीय संबंधों में आई मजबूती का विश्लेषण है। अध्ययन का निष्कर्ष यह है कि राजनीतिक नेतृत्व की इच्छाशक्ति ने संबंधों को लगातार दिशा दी है।
6. **Jerath, R., & Pant, M. (2025).** इस पेपर ने मोदी सरकार के "Neighbourhood First" नीति और बांग्लादेश के साथ कनेक्टिविटी, ऊर्जा, और व्यापारिक सहयोग की समीक्षा की। इसमें 2015 भूमि सीमा समझौता, BBIN पहल, और सुरक्षा सहयोग की चर्चा की गई। हालांकि तीस्ता नदी विवाद और CAA (2019) जैसे मुद्दों को प्रमुख चुनौतियों के रूप में चिन्हित किया गया।
7. **Saikh, S., & Paik, H. (2023).** इस लेख में भारत की पड़ोसी देशों पर केंद्रित विदेश नीति (इंदिरा डॉक्ट्रिन, गुजराल डॉक्ट्रिन, SAARC) और दक्षिण एशिया में भारत-बांग्लादेश की भूमिका पर ध्यान दिया गया। इसमें यह तर्क दिया गया कि भारत को क्षेत्रीय स्थिरता और शक्ति-संतुलन बनाए रखने के लिए बांग्लादेश के साथ करीबी सहयोग की आवश्यकता है।
8. **IISS Webinar (2021).** इस वेबिनार में भारत और बांग्लादेश के उच्च-स्तरीय अधिकारियों (गौहर रिज़वी और पंकज सरन) ने द्विपक्षीय संबंधों की संभावनाओं और चुनौतियों पर चर्चा की। इसमें COVID-19 वैक्सीन सहयोग, सीमा विवाद समाधान, और तीस्ता जल समझौते जैसे मुद्दों को मुख्य फोकस बनाया गया। निष्कर्ष था कि दोनों देश रणनीतिक साझेदारी को और गहरा कर सकते हैं।

उद्देश्य

1. द्वितीयक आंकड़ों का उपयोग करके शेख हसीना के राजनीतिक निष्कासन के भारत-बांग्लादेश द्विपक्षीय संबंधों पर पड़ने वाले प्रभाव का विश्लेषण करना।
2. बांग्लादेश में नेतृत्व परिवर्तन के दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय राजनीति और सुरक्षा गतिशीलता पर पड़ने वाले प्रभावों की जाँच करना।

राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक सहयोग

शेख हसीना (2009-2025) के कार्यकाल में, भारत के साथ उच्च-स्तरीय कूटनीति, विकास वित्त, व्यापार और लोगों के बीच संबंधों में गहराई आई। भारत दक्षिण एशिया में बांग्लादेश को अपना सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार मानता है, जबकि बांग्लादेश भारत को एशिया में अपने शीर्ष साझेदारों में गिनता है; वित्त वर्ष 2023-24 में द्विपक्षीय व्यापार 14.01 अरब अमेरिकी डॉलर था, जिसमें बांग्लादेश का भारत को निर्यात 1.97 अरब अमेरिकी डॉलर था। सड़क, रेल, बंदरगाहों और जलमार्गों में दीर्घकालिक विकास सहयोग के साथ-साथ स्टार्टअप और डिजिटल भुगतान जैसे नए क्षेत्र भी जुड़े। भारत ने हाल के वर्षों में बांग्लादेश को लगभग 8 अरब अमेरिकी डॉलर की ऋण सहायता प्रदान की है, जो किसी भी देश के लिए सबसे बड़ा ऋण पोर्टफोलियो है। सांस्कृतिक और शैक्षिक संबंधों का विस्तार हुआ: भारत बांग्लादेश से दुनिया का सबसे बड़ा वीजा संचालन करता है, मुक्तिजोधा (स्वतंत्रता सेनानी) कल्याण और छात्रवृत्ति का समर्थन करता है, और नियमित रूप से युवा/सांस्कृतिक प्रतिनिधिमंडलों और प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन करता है। जून 2024 में विदेश मंत्रालय के द्विपक्षीय संक्षिप्त विवरण में 2023-24 में वरिष्ठ स्तर की यात्राओं और संयुक्त उद्घाटनों की लय का भी उल्लेख किया गया था - जो संस्थागत सहयोग का प्रमाण है।

आर्थिक रूप से, 2023-24 में भारत का बांग्लादेश को निर्यात 11.06 अरब अमेरिकी डॉलर था, जिसमें इंजीनियरिंग सामान, कपड़ा इनपुट, पेट्रोलियम उत्पाद और रसायन शामिल थे जो दोनों अर्थव्यवस्थाओं के बीच उत्पादन संबंधों को दर्शाता है। विदेशी मुद्रा संबंधी तनाव कम करने और निपटान विकल्पों में विविधता लाने के लिए, दोनों पक्षों ने जुलाई 2023 में रुपये में मूल्यवर्गित व्यापार निपटान शुरू किया, जिसकी शुरुआत बांग्लादेश बैंक और भारतीय उच्चायोग ने संयुक्त रूप से की; इसके तुरंत बाद बांग्लादेशी सरकारी बैंकों ने रुपये में व्यापार उत्पादों की पेशकश शुरू कर दी।

राजनीतिक/सुरक्षा के स्तर पर, हसीना की सरकारों को नई दिल्ली में हमेशा विश्वसनीय साझेदार के रूप में देखा गया। ढाका ने 2009 के बाद भारतीय विद्रोही नेटवर्क के खिलाफ सहयोग किया, गिरफ्तारियों/हस्तांतरणों को सुगम बनाया और निरंतर खुफिया समन्वय किया इन कदमों को भारत के पूर्वोत्तर में विद्रोही हिंसा में कमी का व्यापक श्रेय दिया जाता है। इस दौरान नियमित रूप से महानिदेशक स्तर की बीएसएफ-बीजीबी वार्ता, गृह मंत्रालय के माध्यम और कार्य-स्तरीय तंत्र आम हो गए।

सीमा सुरक्षा और संपर्क समझौते

हसीना के कार्यकाल के दौरान दो ऐतिहासिक सीमा विवादों का निपटारा हुआ और सीमा प्रबंधन को व्यवस्थित किया गया। 2014 के समुद्री मध्यस्थता निर्णय (पीसीए) ने समुद्री सीमा का सीमांकन किया, और 2015 के भूमि सीमा समझौते (एलबीए) ने परिक्षेत्रों के मुद्दे को समाप्त कर दिया, बांग्लादेश में 111 भारतीय परिक्षेत्रों और भारत में 51 बांग्लादेशी परिक्षेत्रों का आदान-प्रदान किया और अनुमानित लगभग 51,549 निवासियों की स्थिति को नियमित किया - यह एक मानवीय और प्रशासनिक सफलता है। भूमि सीमा अब अधिक सुचारु रूप से चलती है, जिससे बेहतर पुलिस व्यवस्था और सेवा वितरण संभव हो पाता है।

परिचालनात्मक रूप से, बीएसएफ और बीजीबी के बीच 2011 की समन्वित सीमा प्रबंधन योजना (सीबीएमपी) ने मानव/मादक पदार्थों की तस्करी, जाली मुद्रा और सीमा पार अपराध के विरुद्ध संयुक्त गश्त/ध्वजा-बैठक प्रोटोकॉल बनाए; यह 1975 के संयुक्त दिशानिर्देशों के साथ-साथ नियमित सहयोग का ढाँचा बना हुआ है। समय-समय पर होने वाली घटनाओं के बावजूद, सीमा का प्रबंधन इन स्थायी तंत्रों और नियमित महानिदेशक-स्तरीय बैठकों के माध्यम से किया जाता है।

कई माध्यमों से कनेक्टिविटी में सुधार हुआ है। छह सीमा-पार रेल लाइनों पर रेलवे संपर्कों का पुनर्वास किया गया, जिनमें मिताली एक्सप्रेस (एनजेपी-ढाका, 2022) सहित नई सेवाएँ शामिल हैं, जबकि अखौरा-अगरतला और खुलना-मोंगला रेल परियोजनाओं का संयुक्त रूप से 2023 में उद्घाटन किया गया। पाँच सीमा-पार बस मार्गों और अंतर्देशीय जल पारगमन एवं व्यापार प्रोटोकॉल (पीआईडब्ल्यूटीटी, 1972 से कार्यरत) ने सड़क/नदी यातायात का विस्तार किया; पीआईडब्ल्यूटीटी के तहत क्रूज सेवाएँ भी शुरू हुईं। महत्वपूर्ण रूप से, चटगाँव और मोंगला बंदरगाहों को 2023 में भारतीय पारगमन के लिए चालू कर दिया गया, जिससे समय और लागत बचाने वाला एक समुद्र-नदी-सड़क गलियारा तैयार हुआ जो भारत के पूर्वोत्तर को बांग्लादेश के रास्ते मुख्य भूमि से जोड़ता है। फेनी नदी पर बने मैत्री सेतु पुल ने चटगाँव की ओर अंतिम मील तक सड़क विकल्पों को विस्तृत किया।

जल-बंटवारा, व्यापार और ऊर्जा साझेदारी

जल सहयोग 1996 की गंगा जल-बंटवारा संधि (फरक्का में कम वर्षा वाले मौसम के लिए 30 वर्षीय ढाँचा) पर आधारित था। सितंबर 2022 में, दोनों पक्षों ने कुशियारा नदी पर एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए, जिसके तहत रहीमपुर (सिलहट) में संयुक्त निगरानी के साथ 153 क्यूसेक पानी निकालने की अनुमति दी गई - जो दशकों में

नदी-विशिष्ट कुछ नई व्यवस्थाओं में से एक है। हालाँकि, बार-बार बातचीत के बावजूद एक व्यापक तीस्ता समझौता अनसुलझा रहा, जिससे यह भावी सरकारों के लिए प्राथमिकता का विषय बन गया। दोनों देश आधिकारिक तौर पर 54 साझा नदियों को मान्यता देते हैं और जल विज्ञान संबंधी आंकड़ों का आदान-प्रदान करने और नदी प्रबंधन पर चर्चा करने के लिए संयुक्त नदी आयोग (स्था. 1972) का उपयोग करते हैं।

ऊर्जा पर परस्पर निर्भरता एक महत्वपूर्ण सफलता बन गई। बांग्लादेश सीमा-पार अंतर्संबंधों के माध्यम से भारत से लगभग 1,160 मेगावाट बिजली आयात करता है, जबकि 1,320 मेगावाट की मैत्री सुपर थर्मल पावर परियोजना (रामपाल) - जो बीपीडीबी-एनटीपीसी का एक संयुक्त उद्यम है - ने घरेलू आधार भार बढ़ाया (इकाइयाँ 2022-23 में चालू होंगी)। नुमालीगढ़ (असम) से पार्वतीपुर (दिनाजपुर) तक भारत-बांग्लादेश मैत्री पाइपलाइन के साथ तरल ईंधन सहयोग को उन्नत किया गया, जिसे 15 साल की आपूर्ति अवधि में 1 मिलियन टन/वर्ष तक डीज़ल उत्पादन बढ़ाने के लिए डिज़ाइन किया गया है। इन सभी कदमों ने बांग्लादेश की बिजली आपूर्ति को सुदृढ़ किया और असुरक्षित सड़क टैकरों से परे रसद में विविधता लाई।

व्यापार के संदर्भ में, भारत के वाणिज्य आँकड़े और उद्योग ट्रैकर्स 2023-24 में बांग्लादेश को 11.06 अरब अमेरिकी डॉलर का निर्यात दर्शाते हैं, जिसमें इंजीनियरिंग और कपड़ा-इनपुट प्रवाह भी मज़बूत है। रुपया-निपटान विंडो (जुलाई 2023 में शुरू) इनवॉइसिंग और भुगतान के लिए एक अतिरिक्त, वैकल्पिक माध्यम प्रदान करती है जो डॉलर-तरलता संकट के दौरान उपयोगी है हालाँकि विश्लेषकों का कहना है कि द्विपक्षीय व्यापार असंतुलन को देखते हुए इसे व्यापक बनाने में समय लगेगा।

घरेलू राजनीतिक माहौल

चुनावी वैधता का क्षरण। मुख्य विपक्षी दल (बीएनपी) द्वारा बहिष्कार के बाद 7 जनवरी 2024 के चुनाव में हसीना की अवामी लीग ने जीत हासिल की; मतदान लगभग 41.8% रहा और पर्यवेक्षकों और मीडिया ने सीमित प्रतिस्पर्धा और चुनावों के दौरान दमन के लिए इसकी तीखी आलोचना की।

2024 के छात्र-नेतृत्व वाले विद्रोह पर एक घातक कार्रवाई। जून-जुलाई 2024 में सिविल सेवा कोटा प्रणाली को लेकर विरोध प्रदर्शन शुरू हुआ और जल्द ही सरकार-विरोधी आंदोलन में बदल गया। सुरक्षा बलों ने कर्फ्यू लगा दिया और देशव्यापी इंटरनेट बंद कर दिया; उस समय ह्यूमन राइट्स वॉच के अनुसार, अगस्त की शुरुआत तक कम से कम लगभग 300 लोग मारे गए और 10,000 से ज़्यादा गिरफ्तार हुए। बाद में संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार तथ्य-खोज प्रयास ने 1 जुलाई से 15 अगस्त, 2024 के बीच लगभग 1,400 लोगों के मारे जाने का आकलन किया, जिसमें यूनिसेफ ने मृतकों में कम से कम 32 बच्चों की पुष्टि की। इन कार्रवाइयों ने हसीना की घरेलू प्रतिष्ठा को बुरी तरह प्रभावित किया और 5 अगस्त, 2024 को उनके इस्तीफे का कारण बना।

आर्थिक तनाव ने अशांति को और बढ़ा दिया। बांग्लादेश 2023-24 में भंडार और मुद्रास्फीति को स्थिर रखने के लिए पहले ही अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) की ओर रुख कर चुका था; विरोध प्रदर्शनों के दौरान लगातार बंद और ब्लैकआउट ने निर्यात (खासकर वस्त्र) को प्रभावित किया, जुलाई के अंत में केवल पाँच दिनों के कर्फ्यू/ब्लैकआउट में अनुमानित 1.2 अरब अमेरिकी डॉलर के राजस्व का नुकसान हुआ। युवाओं की बेरोज़गारी और घटती युवा श्रम शक्ति ने आग में घी डालने का काम किया।

अधिकारों के हनन का खतरा। वर्षों से चली आ रही कठोर पुलिसिंग जिसका उदाहरण 2021 में रैपिड एक्शन बटालियन (आरएबी) पर अमेरिकी प्रतिबंध और 2023 में बांग्लादेश के चुनावों से जुड़ी अमेरिकी वीज़ा-प्रतिबंध नीति

है ने ढाका को पश्चिमी साझेदारों के बीच अलग-थलग कर दिया और दंड से मुक्ति को लेकर घरेलू गुस्से को बढ़ावा दिया।

विपक्ष और नागरिक समाज आंदोलनों की भूमिका

छात्र और परिसर इसके प्रेरक थे। स्टूडेंट्स अगेंस्ट डिस्क्रिमिनेशन और ढाका विश्वविद्यालय के आयोजकों जैसे नेटवर्कों ने बड़े पैमाने पर रैलियों, सड़क अवरोधों, बहिष्कारों और अंततः एक राष्ट्रव्यापी असहयोग अभियान के माध्यम से गति प्रदान की। शिक्षकों और पेशेवर निकायों ने इसमें भाग लिया, जिससे एक मुद्दे पर आरक्षण के विरोध को एक व्यापक लोकतंत्र समर्थक आंदोलन में बदल दिया गया।

बीएनपी की भूमिका गौण थी लेकिन महत्वपूर्ण थी। विश्लेषण से पता चलता है कि बीएनपी संगठनात्मक रूप से कमजोर थी और अक्सर सड़कों पर नेतृत्व करने के बजाय, दूसरों का अनुसरण करती थी। फिर भी, हसीना के जाने की उसकी माँग और नागरिक समाज की लामबंदी ने राजनीतिक संकट को और गहरा कर दिया।

निर्णायक मोड़: सुरक्षा बलों का रुख और सूचना का अभाव। जुलाई 2024 में मोबाइल/ब्रॉडबैंड बंद होने और कर्फ्यू ने जनक्रोध को और बढ़ा दिया; जैसे-जैसे झड़पें बढ़ती गईं और कानून प्रवर्तन एजेंसियां लड़खड़ाती गईं, सेना ने एक अंतरिम रास्ता अपनाने का संकेत दिया। 5 अगस्त, 2024 को, बढ़ते हताहतों और लगातार विरोध प्रदर्शनों के बीच, हसीना ने इस्तीफा दे दिया और देश छोड़ दिया; सेना प्रमुख ने एक अंतरिम व्यवस्था की घोषणा की और 8 अगस्त को मुहम्मद यूनुस को मुख्य सलाहकार के रूप में शपथ दिलाई गई।

वैश्विक और क्षेत्रीय शक्तियों का प्रभाव

संयुक्त राज्य अमेरिका और यूरोप। वाशिंगटन के आरएबी प्रतिबंधों (2021) और 2023 की वीजा नीति ने दमन की लागत बढ़ा दी और वैधता को नुकसान पहुँचाया; यूरोपीय संघ के चुनाव विशेषज्ञों ने 2024 के चुनावों को लेकर विश्वसनीयता के मुद्दों की ओर इशारा किया। इन दबावों के कारण विद्रोह तो नहीं हुआ, लेकिन संकट के दौरान हसीना के बाहरी हस्तक्षेप की गुंजाइश कम हो गई।

भारत। हसीना 15 वर्षों तक ढाका में नई दिल्ली की सबसे करीबी साझेदार रहीं (सुरक्षा सहयोग, संपर्क, व्यापार)। 5 अगस्त के बाद, भारत ने "सुरक्षा कारणों से" चुपचाप उनका स्वागत किया, जिससे 2013 की भारत-बांग्लादेश प्रत्यर्पण संधि के तहत प्रत्यर्पण संबंधी एक नाजुक दुविधा पैदा हो गई और यूनुस की अंतरिम सरकार के साथ संबंधों में नरमी आई। स्थिरता के प्रति भारत की प्राथमिकता और भारत-विरोधी भावनाओं की चिंताओं ने उसके सतर्क रुख को आकार दिया।

चीन और रूस। हसीना के नेतृत्व में, बांग्लादेश ने दोनों के साथ प्रमुख आर्थिक संबंध प्रगाढ़ किए: बीआरआई (2016) से जुड़े लगभग 24 अरब अमेरिकी डॉलर के चीनी ऋण/निवेश प्रतिबद्धताएँ और 12.65 अरब अमेरिकी डॉलर की रूस-वित्तपोषित रूपरु परमाणु परियोजना (90% रूसी ऋण)। उनके जाने के बाद, पूर्व शासक परिवार और रूपपुर से जुड़ी भ्रष्टाचार की जाँच के कारण, ये संबंध घरेलू स्तर पर राजनीतिक रूप से विवादास्पद हो गए, जबकि प्रतिबंधों की जटिलताओं ने भुगतान के नए-नए तरीके अपनाने पर मजबूर कर दिया।

भारत की रणनीतिक क्षमता में बदलाव

एक विश्वसनीय साझेदार का नुकसान: हसीना के नेतृत्व में, नई दिल्ली को भारत के पूर्वोत्तर में उग्रवाद-निरोध, पारगमन/रसद और नियमित शिखर वार्ताओं के मामले में असामान्य रूप से उच्च नीतिगत समन्वय का लाभ मिला।

5 अगस्त 2024 को उनके इस्तीफे और उनके देश छोड़कर चले जाने के बाद, और 8 अगस्त 2024 को मुहम्मद यूनुस के नेतृत्व में एक अंतरिम प्रशासन के गठन के बाद, दिल्ली का प्रभाव नेता-से-नेता के तालमेल से हटकर साधन-स्तरीय प्रबंधन (सीमा बल, सीमा शुल्क, तकनीकी मंत्रालय) में बदल गया। इससे राजनीतिक समझौतों की गति कम हो गई और संबंध अधिक लेन-देन वाले हो गए।

जनभावना और राजनीतिक जोखिम: बांग्लादेश में सत्ता-विरोधी गुस्सा जल्दी ही विदेश नीति के आख्यानो में फैल गया। अंतरिम नेतृत्व ने "भारत-झुकाव" के बजाय पुनर्संतुलन की कोशिश की, जिससे अनसुलझे मुद्दों (जैसे, तीस्ता) पर भारत के लिए पैतरेबाज़ी की गुंजाइश कम हो गई। 2024-25 के दौरान बयानों और मीडिया की बातों ने विश्वास की कमी को बढ़ा दिया है, जिससे भारत को बचाव के लिए मजबूर होना पड़ रहा है सख्त सीमा प्रबंधन पर जोर देते हुए, राजनीतिक परिस्थितियों के स्थिर होने तक कुछ संपर्क उपायों को रोक या धीमा कर दिया गया है।

क्षेत्रीय संतुलन और बाहरी खिलाड़ी: साझेदारों में विविधता लाने के ढाका के संकेत (बीजिंग/इस्लामाबाद और बहुपक्षीय मंचों के लिए अधिक राजनयिक स्थान) भारत की विशेषाधिकार प्राप्त पहुँच को सूक्ष्म रूप से कमज़ोर कर रहे हैं। भारत के पास महत्वपूर्ण भौगोलिक लाभ (पूर्वोत्तर के लिए भूमि पुल, साझा नदियाँ, पावर ग्रिड इंटरकनेक्ट) तो है, लेकिन हसीना के कार्यकाल के दौरान उसे जो राजनीतिक लाभ मिला था, वह कम हो गया है।

व्यापार, संपर्क और सीमा सहयोग में बदलाव

व्यापारिक वस्तुओं में मंदी: 2025 के मध्य तक, साल दर साल, बांग्लादेश को भारत का निर्यात लगभग 11% गिरा, जबकि भारत को बांग्लादेश का निर्यात लगभग 39% गिरा जो संकट-पूर्व प्रवृत्ति रेखा की तुलना में एक तीव्र संकुचन है। दोनों पक्षों की नीतिगत कार्रवाइयों ने गिरावट को और बढ़ा दिया: बांग्लादेश द्वारा अप्रैल 2025 में भूमि बंदरगाहों के माध्यम से धागे के आयात पर प्रतिबंध, उसके बाद भारत द्वारा मई-जून 2025 में DGFT द्वारा लगाए गए प्रतिबंधों ने कई बांग्लादेशी वस्तुओं को भूमि सीमाओं पर डायवर्ट/प्रतिबंधित कर दिया (रेडीमेड वस्त्र और जूट/जूट जैसी वस्तुओं की एक टोकरी को केवल न्हावा शेवा/कोलकाता जैसे चुनिंदा बंदरगाहों के माध्यम से ही अनुमति दी गई)। प्रवर्तन के कारण बेनापोल-पेट्रापोल में ट्रक फंस गए और माल का मार्ग बदल दिया गया, जिससे रसद लागत और पारगमन समय बढ़ गया।

पारगमन और सुविधा वापसी: अप्रैल 2025 में, भारत ने भूमि-सीमा ट्रांसशिपमेंट सुविधा वापस ले ली, जिसने बांग्लादेशी निर्यात को भारतीय प्रवेश द्वारों के माध्यम से तीसरे देशों तक पहुँचने की अनुमति दी थी - जिससे ढाका के क्षेत्रीय शिपमेंट (विशेष रूप से नेपाल/भूटान) के लिए कम लागत वाला वाल्व हट गया। यह, साथ ही प्रवेश बंदरगाह पर प्रतिबंध, हसीना के शासनकाल के दौरान उदारीकरण की तुलना में एक महत्वपूर्ण सख्ती को दर्शाता है।

कनेक्टिविटी परियोजनाएँ मिश्रित प्रगति:

भारतीय माल के लिए चटगाँव और मोंगला पारगमन जो 2023 में चालू होगा एक संरचनात्मक लाभ बना हुआ है, लेकिन राजनीतिक सतर्कता और बदलते सीमा शुल्क नियमों के कारण इसका उपयोग क्षमता से कम रहा है।

अखौरा-अगरतला रेल लिंक (नवंबर 2023 में उद्घाटन) 2025 तक नियमित सेवाओं के लिए अभी भी चालू नहीं है, क्योंकि पहुँच कार्य और परिचालन संबंधी निर्णय लंबित हैं; नियोजित व्यापार/यात्री लाभ अभी तक साकार नहीं हुए हैं।

2021 में उद्घाटन किए गए मैत्री सेतु (फेनी नदी पुल) को अभी भी संबंधित सुविधाओं के पूर्ण संचालन का इंतजार है; हितधारक इसके माध्यम से योजना बनाने के बजाय इसके चारों ओर योजना बना रहे हैं।

ऊर्जा पर परस्पर निर्भरता बरकरार है: राजनीतिक उथल-पुथल के बावजूद, सीमा पार बिजली व्यापार (भारत से बांग्लादेश द्वारा लगभग 1,160 मेगावाट आयात) और ईंधन रसद (2023 में चालू होने वाली नुमालीगढ़-पार्वतीपुर डीजल पाइपलाइन) बड़े पैमाने पर जारी रहे हैं, क्योंकि ये बांग्लादेश के ग्रिड को स्थिर करते हैं और दीर्घकालिक उठाव/आपूर्ति अनुबंधों में अंतर्निहित हैं। यह निरंतरता व्यापारिक व्यापार और सीमा रसद में टकराव के विपरीत है।

सुरक्षा और प्रवासन के मुद्दों में उभरती चुनौतियाँ

अनियमित प्रवासन और "पुशबैक": 2025 की शुरुआत से लेकर मध्य तक, सीमावर्ती भारतीय राज्यों (विशेषकर असम) ने सैकड़ों गैर-दस्तावेजी घुसपैठियों को रोककर "वापस धकेले जाने" की सूचना दी; राज्य के विपक्षी नेताओं के सार्वजनिक पत्रों और मुख्यमंत्रियों के आधिकारिक बयानों ने उचित प्रक्रिया बनाम त्वरित निष्कासन पर बहस छेड़ दी। यह राष्ट्रीय/राज्यीय मील के पत्थर से पहले बीएसएफ-राज्य पुलिस के संयुक्त अभियानों में तेजी के साथ हुआ, जो 4,096 किलोमीटर लंबी सीमा पर एक सुरक्षित वातावरण का संकेत देता है।

सीमा बल कूटनीति तनाव में, लेकिन बरकरार: महानिदेशक स्तर की बीएसएफ-बीजीवी सम्मेलन (ढाका में अगस्त 2025 के अंत में) तय कार्यक्रम के अनुसार आयोजित किए गए हैं, जिनमें सीमा पर हत्याएं, "पुश-इन", मानव/मादक पदार्थों की तस्करी, सोने/मवेशियों की तस्करी और बाड़ लगाने जैसे एजेंडे प्रमुख रहे हैं। 2011 की समन्वित सीमा प्रबंधन योजना के तंत्र अभी भी काम कर रहे हैं, लेकिन दोनों पक्ष राजनीतिक स्पष्टता आने तक अपनी सामरिक स्थिति को सख्त बना रहे हैं।

रोहिंग्या और क्षेत्रीय फैलाव: म्यांमार में बिगड़ते हालात और बढ़ते समुद्री/स्थलीय आवागमन (2024 में 11,000 से ज़्यादा अनियमित यात्राओं के प्रयास) के बीच बांग्लादेश लगभग 10 लाख रोहिंग्याओं की मेज़बानी कर रहा है। शिविरों की स्थिति में किसी भी तरह की गिरावट या वित्तीय कमी से भारत के पूर्वोत्तर और बंगाल के तटीय क्षेत्रों की ओर द्वितीयक आवागमन का जोखिम बढ़ जाता है, जिससे पुलिस व्यवस्था और मानवीय समन्वय जटिल हो जाता है।

सीएचटी और सीमांत सुरक्षा: चटगाँव पहाड़ी क्षेत्र की गतिशीलता अंतरालीय उग्रवाद और आपराधिक नेटवर्क त्रिपुरा/मिज़ोरम क्षेत्रों पर दबाव बढ़ाते हैं। यह, मादक पदार्थों की तस्करी के रास्तों के साथ मिलकर, सुरक्षा बल की स्थिति को ऊँचा रखता है और खुफिया सहयोग को आवश्यक बनाता है, जबकि ऊपर से नीचे तक राजनीतिक संबंध डगमगा रहे हैं।

दक्षिण एशिया में शक्ति संतुलन (भारत-चीन-पाकिस्तान)

प्रतिस्पर्धी बहुध्रुवीयता की ओर पुनर्संतुलन। हसीना के जाने से ढाका में एक विश्वसनीय भारत-समर्थक नेता का पतन हुआ और भारत-चीन के बीच एक तीखी प्रतिस्पर्धा का रास्ता खुला। बीजिंग लंबे समय से बांग्लादेश के बंदरगाहों, ऊर्जा और औद्योगिक गलियारों (मंगला के आसपास के प्रस्तावों और बंगाल की खाड़ी के प्रवेश द्वारों में रुचि सहित) में गहरी हिस्सेदारी चाहता रहा है, जबकि टोक्यो का बिग-बी/मटरबारी कार्यक्रम और भारत की कनेक्टिविटी वैकल्पिक वित्तपोषण और मानकों को आगे बढ़ा रही है। इसका कुल प्रभाव एक सघन त्रिकोणीय प्रतिस्पर्धा है: भारत की भौगोलिक निकटता और ग्रिड/परिवहन पर परस्पर निर्भरता अभी भी संरचनात्मक लाभ प्रदान करती है; चीन की पूंजी और टर्नकी परियोजनाओं का कार्यान्वयन ढाका को विविधीकरण के विकल्प प्रदान करता है; पाकिस्तान भारत के प्रति-संतुलन के लिए चीनी समर्थन और सामयिक राजनयिक अवसरों का लाभ उठाता है।

चीन द्वारा समर्थित पाकिस्तान का सैन्य-समुद्री उत्थान। इस्लामाबाद का सैन्य-आधुनिकीकरण विशेषकर चीनी मूल की पनडुब्बियों और सतही लड़ाकू जहाजों का उत्तरी अरब सागर और विस्तार से, पूर्वी हिंद महासागर क्षेत्र में पाकिस्तान की नौसैनिक उपस्थिति को बढ़ाता है। हालाँकि ये मंच बंगाल की खाड़ी के संतुलन को तुरंत नहीं बदलते, लेकिन ये चीन-पाक सुरक्षा के व्यापक समीकरण को मज़बूत करते हैं जो भारत के दो मोर्चों पर निवारक रणनीति को जटिल बनाता है।

भारत का हेजिंग मिश्रण: भूगोल + गठबंधन। भारत के पास निर्णायक निकटता लाभ हैं 4,096 किलोमीटर लंबी साझा सीमाएँ, बांग्लादेश को आपूर्ति करने वाले दो सीमा-पार बिजली इंटरकनेक्टर और बहु-मोडल भूमि-नदी-समुद्र गलियारे। साथ ही, नई दिल्ली चीनी वित्तीय शक्ति का मुकाबला करने के लिए गठबंधनों (बिग-बी/मटरबारी में जापान के साथ; हिंद-प्रशांत में समान विचारधारा वाले साझेदारों के साथ) पर दोगुना ज़ोर दे रहा है। हसीना के बाद, भारत का प्रभाव व्यक्तिगत संबंधों पर कम और अंतर्निहित बुनियादी ढाँचे, ऊर्जा संबंधों और नियम-आधारित संपर्क पर अधिक केंद्रित है।

हसीना के बाद बिस्स्टेक और सार्क में बांग्लादेश की भूमिका

बिस्स्टेक: ढाका पूर्वोत्तुखी चाप का आधार स्तंभ। बिस्स्टेक पाँच दक्षिण एशियाई देशों को थाईलैंड और म्यांमार से जोड़ता है और दुनिया की लगभग 22% आबादी का प्रतिनिधित्व करता है और इसका सकल घरेलू उत्पाद 4.5-5.0 ट्रिलियन डॉलर के बीच है। बांग्लादेश भारत के पूर्वोत्तर और खाड़ी के बीच एक भौतिक केंद्र है, जो इसे परिवहन संपर्क के लिए बिस्स्टेक मास्टर प्लान (2018-2028) का केंद्र बनाता है - इस उप-क्षेत्र में दो सौ से अधिक रेल, सड़क और बंदरगाह उन्नयन की एक पाइपलाइन। घरेलू उथल-पुथल के बीच भी, ढाका की नौकरशाही ने सीमा शुल्क पारगमन, तटीय नौवहन और मानकों पर कार्यप्रवाह को जीवित रखा है; यहाँ प्रगति उच्च-दृश्यता वाले बड़े-सौदों की तुलना में तेज़, कम-राजनीतिक लाभ प्रदान करती है।

सार्क: सीमित लाभ, दृश्यता मायने रखती है। सार्क प्रभावी रूप से मृतप्राय हो चुका है (2014 के बाद से कोई नेता सम्मेलन नहीं हुआ है), लेकिन हसीना के बाद ढाका के पास परिणामों पर राजनीतिक दांव लगाए बिना क्षेत्रीय संवाद को पुनर्जीवित करने के लिए समर्थन व्यक्त करके समान दूरी का संकेत देने की अधिक गुंजाइश है। व्यावहारिक रूप से, सार्क के सर्वसम्मति-आधारित तंत्रों की तुलना में बिस्स्टेक उप-समूहों और द्विपक्षीय/चतुर्भुज प्रारूपों के माध्यम से व्यापार और सुरक्षा संबंधी उपलब्धियाँ अधिक संभावित हैं।

व्यावहारिक रुख अपनाने की संभावना। अंतरिम नेतृत्व और कोई भी उत्तराधिकारी सरकार जोखिम-प्रबंधित विविधीकरण को महत्व देगी: बिस्स्टेक कनेक्टिविटी को आगे बढ़ाना जिससे रसद लागत सीधे कम हो, सार्क की बयानबाजी को रचनात्मक बनाए रखना, और किसी एक भागीदार पर अत्यधिक निर्भरता से बचने के लिए जापान, बहुपक्षीय और (चुनिंदा रूप से) चीन से समानांतर वित्तपोषण आमंत्रित करना।

बंगाल की खाड़ी का भू-राजनीतिक महत्व और हिंद-प्रशांत रणनीतियाँ

खाड़ी क्यों महत्वपूर्ण है? बंगाल की खाड़ी हिंद-प्रशांत के पूर्व-पश्चिम समुद्री मार्गों पर स्थित है। विस्तृत हिंद महासागर वैश्विक थोक माल का एक-तिहाई से अधिक और समुद्री तेल प्रवाह का अधिकांश भाग वहन करता है; मलक्का जलडमरूमध्य को अरब सागर से जोड़ने वाले मार्ग बांग्लादेश के तट के पास से गुजरते हैं। दुनिया का लगभग आधा कंटेनर यातायात आसपास के गलियारों से होकर गुजरता है, जिससे खाड़ी से सटे बंदरगाह, फीडर सेवाएँ और तटीय शिपिंग समझौते आपूर्ति-श्रृंखला के लचीलेपन के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण हो जाते हैं।

बंदरगाह और गलियारे: जापान बनाम चीन, जिसमें भारत भी शामिल है। बांग्लादेश का गहरे समुद्र वाला मटरबारी बंदरगाह (जापान के बिग-बी और व्यापक मोहेशखली-मटरबारी औद्योगिक पहल द्वारा समर्थित) गहरे ड्राफ्ट और आधुनिक मानकों वाले बड़े कंटेनर और ऊर्जा कार्गो को संभालने के लिए डिज़ाइन किया गया है जो स्वच्छ ईंधन, बिजली आयात और क्षेत्रीय ट्रांस-शिपमेंट के लिए एक आधार है। इसके विपरीत, सोनादिया के लिए चीन से जुड़ी पहले की योजनाएँ रद्द कर दी गईं; नए चीनी संकेतों ने पुराने बंदरगाहों और औद्योगिक पार्कों के उन्नयन पर ध्यान केंद्रित किया है। भारत का दांव दोहरा है: (i) चटगाँव/मोंगला होते हुए समुद्र से नदी और फिर सड़क तक के गलियारे, जो भारत के पूर्वोत्तर के लिए समय और लागत में कटौती करते हैं, और (ii) सीमा पार बिजली व्यापार और डीजल पाइपलाइन के माध्यम से ऊर्जा सुरक्षा, जो ट्रकिंग की अड़चनों को कम करती है। ये सब मिलकर निर्भरताओं का एक ऐसा जाल बनाते हैं जो राजनीतिक तनाव के समय भी संकट के जोखिम को कम करता है।

बांग्लादेश का हिंद-प्रशांत दृष्टिकोण (आईपीओ): मानक और संकेत। ढाका का आईपीओ नौवहन की स्वतंत्रता, संपर्कता, सतत विकास और समावेशी वृद्धि पर जोर देता है जानबूझकर सैन्य गुटों से बचते हुए सभी भागीदारों से वित्त और प्रौद्योगिकी का स्वागत करता है। हसीना के बाद, सामरिक समायोजनों के साथ सिद्धांतों में निरंतरता की उम्मीद करें: रसद, ऊर्जा परिवर्तन और डिजिटल व्यापार के लिए प्रतिस्पर्धी बोलियों को प्रोत्साहित करना; बंदरगाह/रेल उन्नयन को बिम्सटेक गलियारों के साथ संरेखित करना; और भारत, जापान और अन्य देशों के साथ समुद्री क्षेत्र जागरूकता और आपदा प्रतिक्रिया को गैर-विवादास्पद सहयोग मार्गों के रूप में बनाए रखना।

निष्कर्ष और नीतिगत सुझाव

प्रमुख निष्कर्षों का सारांश

- एक राजनीतिक मोड़: शेख हसीना के जाने (अगस्त 2024) के बाद, विश्वसनीय, शीर्ष-स्तरीय राजनीतिक तालमेल की जगह एक अधिक लेन-देन-आधारित, संस्था-संचालित दौर ने ले ली है। भारत का प्रभाव अब नेता-स्तरीय तालमेल पर कम और संरचनात्मक परस्पर निर्भरता साझा सीमाएँ, बिजली अंतर्संबंध, बहु-मॉडल गलियारे और नदी प्रणालियाँ पर अधिक निर्भर है।
- व्यापार और रसद व्यवधान: 2024-25 में द्विपक्षीय व्यापार में तीव्र अस्थिरता, भूमि बंदरगाहों पर नीति-संचालित टकराव (मार्ग प्रतिबंध, ट्रांसशिपमेंट रोलबैक), और नव निर्मित गलियारों (चटगाँव/मोंगला पारगमन, मैत्री सेतु, अखौरा-अगरतला रेल) का कम उपयोग देखा गया।
- सुरक्षा समन्वय बरकरार है, लेकिन और भी कठिन: महानिदेशक स्तर की बीएसएफ-बीजीबी व्यवस्थाएँ जारी हैं, फिर भी दोनों पक्षों में बढ़ती घरेलू राजनीति के बीच, पीछे धकेलना, तस्करी, बाड़ लगाना और सीमा पर होने वाली मौतें अधिक प्रमुख हो गई हैं।
- जल और ऊर्जा: मिश्रित तस्वीर: गंगा संधि और कुशियारा समझौता जापान अभी भी आधार बने हुए हैं; तीस्ता का मामला अभी तक सुलझा नहीं है। सीमा पार बिजली व्यापार (~1.1 गीगावाट) और डीजल पाइपलाइन राजनीतिक उथल-पुथल के बावजूद ग्रिड/ईंधन तनाव को कम करते हुए लचीले साबित हुए हैं।
- क्षेत्रीय ज्यामिति: प्रभाव का संतुलन प्रतिस्पर्धी बहुध्रुवीयता की ओर झुका है भारत के भौगोलिक और अवसंरचनात्मक लाभ बनाम चीन की पूँजी/अनुबंध क्षमताएँ जबकि बांग्लादेश बिम्सटेक, जापान समर्थित कार्यक्रमों और चुनिंदा चीनी वित्तपोषण के माध्यम से जोखिम-प्रबंधित विविधीकरण चाहता है।

- बंगाल की खाड़ी में दांव: खाड़ी में गहरे समुद्र की क्षमता, फीडर नेटवर्क और समुद्र-नदी-सड़क गलियारे यह निर्धारित करेंगे कि बांग्लादेश एक पारगमन राज्य से हिंद-प्रशांत आपूर्ति श्रृंखलाओं के भीतर एक रसद और ऊर्जा केंद्र के रूप में विकसित होता है या नहीं।

भारत और बांग्लादेश के लिए नीतिगत सुझाव

1. व्यापार एवं रसद स्थिरीकरण: भारत और बांग्लादेश को निलंबित ट्रांसशिपमेंट मार्गों को फिर से खोलकर, नाशवान वस्तुओं और वस्त्रों के लिए ग्रीन लेन का संचालन करके, और ट्रकों के आने-जाने के समय को 24 घंटे से कम करके, पूर्वानुमानित सीमा संचालन बहाल करना होगा। एक संयुक्त एकल-खिड़की प्रणाली और समन्वित एसपीएस/टीबीटी दस्तावेज़ीकरण व्यापार सुगमता में तत्काल विश्वास पैदा करेगा।
2. संपर्क सक्रियण: माल दुलाई के लिए अखौरा-अगरतला रेल मार्ग को तेज़ करना, 7-दिवसीय सीमा शुल्क के लिए मैत्री सेतु को पूरी तरह से चालू करना, और अंतर्देशीय जलमार्ग मार्गों का विस्तार मौजूदा बुनियादी ढाँचे को गति प्रदान करेगा। स्पष्ट उपयोग लक्ष्य निर्धारित करना (जैसे, 12 महीनों में +30% कंटेनर थ्रूपुट) मापनीय प्रगति सुनिश्चित करता है।
3. सीमा सुरक्षा और मानवीय संतुलन: सीबीएमपी के तहत एक नए सीमा मानक संचालन प्रक्रिया (एसओपी), जिसमें गैर-घातक बल और संयुक्त गश्त को प्राथमिकता दी जाएगी, से मृत्यु दर में कमी आएगी। एक संयुक्त तस्करी-रोधी कार्यबल को सोना, नशीली दवाओं और मानव तस्करी के नेटवर्क को ध्वस्त करना चाहिए, जबकि बायोमेट्रिक फ्रंटियर कार्ड और मौसमी श्रम समझौता ज्ञापन प्रवासन को सुरक्षित, कानूनी रास्तों पर ले जाएँगे।
4. जल एवं ऊर्जा सहयोग: अंतरिम प्रवाह, तलछट और संयुक्त हाइड्रोमेट्री पर एक तीस्ता तकनीकी समूह की स्थापना से जल विवादों का राजनीतिकरण होगा। वास्तविक समय में बाढ़ की पूर्व चेतावनी देने वाले डेटा साझाकरण और संयुक्त सामुदायिक चेतावनी प्रणालियाँ आपदाओं को कम कर सकती हैं। सीमा पार बिजली आयात और पाइपलाइन उपयोग को बढ़ाकर ऊर्जा विश्वसनीयता सुनिश्चित की जानी चाहिए।
5. वित्तीय और डिजिटल एकीकरण: रुपये में मूल्यवर्गित निपटान पायलट, विस्तारित बैंक सूचियाँ और यूपीआई-वास्तविक समय भुगतान अंतर-संचालनीयता एमएसएमई के लिए लेनदेन लागत में कमी लाएगी। पारदर्शी यातायात मॉडल के साथ कॉरिडोर वित्त बुनियादी ढाँचे के जोखिम को कम करेगा, जबकि शिक्षा और चिकित्सा वीजा को आसान बनाने से सेवा व्यापार पुनर्जीवित होगा।
6. क्षेत्रीय और समुद्री सहयोग: बिस्स्टेक के माध्यम से, भारत और बांग्लादेश को बहुपक्षीय समर्थन के साथ रेल, बंदरगाह और सीमा शुल्क मानकों को एकीकृत करने वाला एक कॉरिडोर पैकेज पेश करना चाहिए। बंगाल की खाड़ी में, समुद्री क्षेत्र जागरूकता में वृद्धि, संयुक्त SAR/HADR अभ्यास और मत्स्य पालन प्रवर्तन क्षेत्रीय सुरक्षा और स्थिरता को मज़बूत करेंगे।
7. निगरानी और जवाबदेही: एक संयुक्त डैशबोर्ड को मापने योग्य संकेतकों पर नज़र रखनी चाहिए: ट्रक टर्नअराउंड समय, ग्रीन-लेन खेपों का प्रतिशत, चटगाँव/मोंगला के रास्ते कंटेनर थ्रूपुट, सीमावर्ती घटनाएँ, बिजली/पाइपलाइन विश्वसनीयता और बाढ़ चेतावनी का समय। पारदर्शी मीट्रिक विश्वास और निरंतर प्रगति सुनिश्चित करते हैं।

भावी शोध दिशाएँ

1. नीतिगत झटकों के अंतर्गत व्यापार लोच: मार्ग प्रतिबंधों और ट्रांसशिपमेंट निकासी ने लागत, वितरण समय और मार्जिन को कैसे प्रभावित किया, इस पर फर्म-स्तरीय पैनल अध्ययन।
2. गलियारा प्रतिस्पर्धात्मकता: खाड़ी से भीतरी इलाकों तक के मार्गों (चटगाँव/मोंगला ↔ पूर्वोत्तर भारत) का समय-लागत बेंचमार्किंग बनाम पारंपरिक चिकन नेक मार्ग।
3. जल विज्ञान और जलवायु जोखिम: जलवायु परिदृश्यों के अंतर्गत तीस्ता/गंगा-पद्मा प्रवाह का बेसिन-स्तरीय मॉडलिंग; संयुक्त तलछट/ट्रेजिंग रणनीतियों का मूल्यांकन।
4. सुरक्षा और प्रवासन माइक्रोडेटा: सीमावर्ती घटनाओं, तस्करी के प्रकारों और सामुदायिक-पुलिसिंग एवं बायोमेट्रिक योजनाओं की प्रभावकारिता पर उच्च-आवृत्ति डेटासेट।
5. ऊर्जा परस्पर निर्भरता लचीलापन: विदेशी मुद्रा की कमी, माँग में वृद्धि और चक्रवात व्यवधानों के अंतर्गत बिजली-व्यापार और पाइपलाइन रसद पर तनाव परीक्षण।
6. बंगाल की खाड़ी भू-अर्थशास्त्र: बंदरगाह उत्पादकता, फीडर नेटवर्क, और इंडो-पैसिफिक कंटेनर प्रवाह के भीतर मातरबारी / चटगाँव / मोंगला की ट्रांसशिपमेंट क्षमता।

संदर्भ सूची

1. विदेश मंत्रालय, भारत सरकार। (2023)। *भारत-बांग्लादेश द्विपक्षीय संबंध*। नई दिल्ली: विदेश मंत्रालय। उपलब्ध: <https://mea.gov.in/>
2. बॉर्डर गार्ड बांग्लादेश। (2022)। *भारत-बांग्लादेश सीमा प्रबंधन रिपोर्ट*। ढाका: बीजीबी। उपलब्ध: <https://www.bgb.gov.bd/>
3. भारतीय उच्चायोग, ढाका। (2023)। *भारत-बांग्लादेश व्यापार और आर्थिक सहयोग*। ढाका: भारतीय उच्चायोग। उपलब्ध: <https://www.hcidhaka.gov.in/>
4. विश्व बैंक। (2023)। *बांग्लादेश आर्थिक अद्यतन रिपोर्ट*। वॉशिंगटन डी.सी.: विश्व बैंक। उपलब्ध: <https://www.worldbank.org/en/country/bangladesh>
5. एशियाई विकास बैंक। (2023)। *बांग्लादेश: आर्थिक संकेतक और विकास*। मनीला: एडीबी। उपलब्ध: <https://www.adb.org/countries/bangladesh/main>
6. निति आयोग, भारत सरकार। (2022)। *भारत-बांग्लादेश क्षेत्रीय संपर्क परियोजनाएँ*। नई दिल्ली: निति आयोग। उपलब्ध: <https://www.niti.gov.in/>
7. संयुक्त राष्ट्र एशिया-प्रशांत आर्थिक और सामाजिक आयोग (UNESCAP)। (2022)। *दक्षिण एशिया में क्षेत्रीय संपर्क और व्यापार रिपोर्ट*। बैंकॉक: यूएनईस्कैप। उपलब्ध: <https://www.unescap.org/>
8. दास, रिम्पी., & मांडोरा, राजकुमार। (2024)। *भारत-बांग्लादेश रक्षा संबंधों का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य: 1971 के बाद की उत्पत्ति*। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साइंटिफिक डेवलपमेंट एंड रिसर्च (IJSDR), 9(10), 309-320। उपलब्ध: <http://www.ijedr.org>
9. नीति विश्लेषण रिपोर्ट। (2021, 28 मार्च)। *21वीं सदी में भारत-बांग्लादेश संबंध*। जी.एस. पेपर-II (अंतरराष्ट्रीय संबंध)। उपलब्ध: <https://www.drishtias.com/daily-updates/daily-news-analysis/india-bangladesh-ties-in-21st-century>
10. मलिक, ज़हूर अहमद। (2014)। *यूपीए सरकार के दौरान भारत की बांग्लादेश नीति*। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मैनेजमेंट एंड सोशल साइंस रिसर्च रिव्यू (IJMSSR), 1(2), 172-179। उपलब्ध: <https://ijmsrr.com>

11. डबोवा, एलेना। (2014)। *भारत-बांग्लादेश सीमा बाड़ और सीमा पार प्रवासन*। आल्देआ मुंडो, 19(38), 19-34। यूनिवर्सिदाद दे लॉस एंजेस, वेनेजुएला। उपलब्ध: <http://www.redalyc.org/articulo.oa?id=54343693003>
12. भट्टाचार्य, जायिता। (2020)। *भारत-बांग्लादेश संबंधों के 50 वर्ष पूरे होने का उत्सव*। इंडियन फॉरेन अफेयर्स जर्नल, 15(3), 228-236। आब्जर्वर रिसर्च फाउंडेशन, नई दिल्ली। उपलब्ध: <https://www.associationdiplomats.org/publication/indian-foreign-affairs-journal-vol-15-no-3-july-september-2020>
13. जेराथ, रिया., & पंत, मेहा। (2025)। *एन.डी.ए. शासन (2014-2024) के दौरान भारत-बांग्लादेश संबंधों में गतिशील परिवर्तन*। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ क्रिएटिव रिसर्च थॉट्स (IJCRT), 13(2), 777-790। उपलब्ध: <http://www.ijcrt.org/IJCRT2502677.pdf>
14. शेख, सूरज., & पैक, हुमायूँ। (2023)। *21वीं सदी में पड़ोसी रणनीति: दक्षिण एशिया में भारत के हित*। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च पब्लिकेशन एंड रिव्यूज़ (IJRPR), 4(5), 2656-2660। उपलब्ध: https://www.ijrpr.com/upload_issue/ijrpr13782.pdf
15. इंटरनेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ स्ट्रैटेजिक स्टडीज़ (IISS)। (2021, 23 मार्च)। *भारत-बांग्लादेश संबंध: संभावनाएँ और चुनौतियाँ (वेबिनार ट्रांसक्रिप्ट)*। लंदन: IISS। उपलब्ध: <https://www.iiss.org/events/2021/03/india-bangladesh-relations-prospects-and-challenges/>
16. विदेश मंत्रालय, भारत सरकार। (2024)। *भारत-बांग्लादेश संबंध: द्विपक्षीय संक्षिप्त विवरण*। नई दिल्ली: विदेश मंत्रालय। उपलब्ध: <https://mea.gov.in/Portal/ForeignRelation/Bangladesh February 2024.pdf>
17. वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार। (2024)। *भारत का विदेशी व्यापार: बांग्लादेश के साथ द्विपक्षीय आँकड़े (2023-24)*। नई दिल्ली: डीजीएफटी। उपलब्ध: <https://commerce.gov.in/>
18. भारतीय उच्चायोग, ढाका। (2023)। *रुपया व्यापार निपटान व्यवस्था का शुभारम्भ: भारत-बांग्लादेश*। ढाका: भारतीय उच्चायोग। उपलब्ध: <https://hcidhaka.gov.in/>
19. भारत सरकार एवं बांग्लादेश सरकार। (2015)। *भारत-बांग्लादेश भूमि सीमा समझौता*। नई दिल्ली-ढाका: दोनों देशों की संसद द्वारा अनुमोदित। उपलब्ध: <https://www.mea.gov.in/bilateral-documents.htm?dtl/25268>
20. स्थायी पंचाट न्यायालय (Permanent Court of Arbitration)। (2014)। *बांग्लादेश-भारत समुद्री सीमा विवाद का निर्णय*। हेग: PCA। उपलब्ध: <https://pcacases.com/web/sendAttach/383>
21. सीमा सुरक्षा बल (BSF) एवं बॉर्डर गार्ड बांग्लादेश (BGB)। (2011)। *समन्वित सीमा प्रबंधन योजना (CBMP)*। नई दिल्ली-ढाका। उपलब्ध: <https://bsf.gov.in/>

22. भारत सरकार एवं बांग्लादेश सरकार। (2022, सितम्बर)। *कुशियारा नदी पर जल-साझेदारी संबंधी समझौता ज्ञापन*। नई दिल्ली-ढाका। उपलब्ध: <https://mea.gov.in/bilateral-documents.htm?dtl/35690>
23. भारत-बांग्लादेश संयुक्त नदी आयोग (JRC)। (1996)। *गंगा जल बंटवारा संधि*। नई दिल्ली-ढाका। उपलब्ध: <https://mea.gov.in/in-focus-article.htm?18997/Ganges+Water+Sharing+Treaty>
24. भारत सरकार एवं बांग्लादेश पावर डेवलपमेंट बोर्ड। (2023)। *मैत्री सुपर थर्मल पावर परियोजना (Rampal, 1320 MW)*। नई दिल्ली-ढाका: NTPC-BPDB JV। उपलब्ध: <https://ntpc.co.in/en/projects/maitree>
25. भारत सरकार। (2023)। *भारत-बांग्लादेश मित्रता पाइपलाइन: नुमालीगढ़ (असम) से परबतिपुर (दिनाजपुर)*। पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्रालय। उपलब्ध: <https://pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1906699>
26. अंतर्राष्ट्रीय सामरिक अध्ययन संस्थान (IISS)। (2021, 23 मार्च)। *भारत-बांग्लादेश संबंध: संभावनाएँ और चुनौतियाँ (वेबिनार ट्रांसक्रिप्ट)*। लंदन: IISS। उपलब्ध: <https://www.iiss.org/events/2021/03/india-bangladesh-relations-prospects-and-challenges>
27. बीबीसी न्यूज़। (2024, अगस्त 6)। बांग्लादेश: शेख हसीना ने इस्तीफा दिया, विरोध प्रदर्शनों में सैकड़ों की मौत। प्राप्त किया गया <https://www.bbc.com/hindi> से
28. अल-जज़ीरा। (2024, अगस्त 7)। बांग्लादेश में छात्र आंदोलन ने सरकार गिराई, मोहम्मद यूनुस बने अंतरिम प्रमुख। प्राप्त किया गया <https://www.aljazeera.com/> से
29. ह्यूमन राइट्स वॉच। (2024, अगस्त 12)। बांग्लादेश: विरोध पर दमन, 300 से अधिक मृतक और हज़ारों हिरासत में। प्राप्त किया गया <https://www.hrw.org/> से
30. संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार कार्यालय। (2024, अगस्त 20)। बांग्लादेश में विरोध प्रदर्शनों पर कार्रवाई: लगभग 1,400 मौतों की पुष्टि। प्राप्त किया गया <https://www.ohchr.org/> से
31. द गार्जियन। (2024, जनवरी 8)। बांग्लादेश चुनाव 2024: कम मतदान और विपक्षी बहिष्कार के बीच शेख हसीना की जीत। प्राप्त किया गया <https://www.theguardian.com/> से
32. फ़ाइनेंशियल टाइम्स। (2024, जुलाई 30)। बांग्लादेश संकट: इंटरनेट ब्लैकआउट और कर्फ्यू से 1.2 अरब डॉलर का निर्यात नुकसान। प्राप्त किया गया <https://www.ft.com/>
33. संयुक्त राज्य अमेरिका विदेश विभाग। (2023, सितम्बर 22)। बांग्लादेश चुनाव प्रक्रिया पर वीजा प्रतिबंध नीति। प्राप्त किया गया <https://www.state.gov/>
34. प्रेस ट्रस्ट ऑफ इंडिया। (2024, अगस्त 9)। शेख हसीना भारत पहुँचीं, अंतरिम सरकार ने संबंधों पर नए सवाल उठाए। प्राप्त किया गया <https://www.ptinews.com/>
35. चाइना डेली। (2016, अक्टूबर 15)। चीन-बांग्लादेश ने 24 अरब डॉलर निवेश समझौते पर हस्ताक्षर किए। प्राप्त किया गया <https://www.chinadaily.com.cn/>

36. टास न्यूज़ एजेंसी। (2017, दिसम्बर 25)। रूस-बांग्लादेश ने रूपपुर परमाणु ऊर्जा परियोजना के लिए 12.65 अरब डॉलर का अनुबंध किया। प्राप्त किया गया <https://tass.com/>
37. विदेश मंत्रालय, भारत सरकार। (2024)। *भारत-बांग्लादेश संबंध: द्विपक्षीय संक्षिप्त विवरण (फरवरी 2024)*। नई दिल्ली: विदेश मंत्रालय। उपलब्ध: https://mea.gov.in/Portal/ForeignRelation/Bangladesh_February_2024.pdf
38. वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार (DGFT)। (2024)। *विदेश व्यापार आंकड़े 2023-24: भारत-बांग्लादेश*। नई दिल्ली: वाणिज्य मंत्रालय। उपलब्ध: <https://commerce.gov.in/>
39. भारतीय उच्चायोग, ढाका। (2023, जुलाई)। *भारत-बांग्लादेश रुपये में व्यापार निपटान व्यवस्था का शुभारम्भ*। ढाका: भारतीय उच्चायोग। उपलब्ध: <https://hcidhaka.gov.in/>
40. भारत सरकार एवं बांग्लादेश सरकार। (2015)। *भारत-बांग्लादेश भूमि सीमा समझौता अधिनियम*। नई दिल्ली-ढाका। उपलब्ध: <https://mea.gov.in/bilateral-documents.htm?dtl/25268>
41. स्थायी पंचाट न्यायालय (Permanent Court of Arbitration)। (2014)। *बांग्लादेश बनाम भारत समुद्री सीमा मध्यस्थता मामला*। हेग: PCA। उपलब्ध: <https://pcacases.com/web/sendAttach/383>